मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद प्रणेता श्रद्धेय ए. नागराज जी अमरकंटक आधारित यह संबंधित शोध अध्ययन अपने पी.एच.डी. शोध कार्य के दौरान शोधकर्ता अवधेश पटेल ने अपने पी.एच.डी. थीसिस में लिखा है। इस पी.एच.डी. थीसिस में से मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद से संबंधित यह सभी शोध अध्ययन का उल्लेख किया गया है।

मध्यस्थ दर्शन सह अस्तित्ववाद से संबंधित शोध अध्ययन एवं शोध संबंधी कार्य :–

- **डॉ. पाठक सुरेन्द्र (2018)** "Peace, Harmony and Harmonious Education'' प्रकाशित "Innovation and Education" प्रस्तुत अध्ययन में मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद के आधार पर शांति, सद्भाव और समरस शिक्षा के स्वरूप के अध्ययन को प्रस्तुत किया है। अध्ययन में स्पष्ट किया गया है कि अस्तित्व सहअस्तित्व है, प्रकृति की चार अवस्थाओं में समरस संबध है। प्रकृति में समरस प्राकृतिक पेटर्न (Harmonious Natural Patterns) देखने मिलते है जो यह दर्शाता है कि प्राकृतिक क्रियाओं में अंतर्निहित समरसता विद्यमान रहती है और यह समरसता अस्तित्व में व्यष्टि से समष्टि तक विद्यमान रहती है। अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला गया है कि समरसता ही सार्वभौमिकता है। अध्ययन में इस बात को स्थापित करने का प्रयास किया गया है कि प्रत्येक वस्तु इकाईयां अंतर्संबंध में सम्पूर्ण (Everything's in inter connected whole) है। अतः मध्यस्थ दर्शन–सहअस्तित्ववाद के सिद्धांत और दर्शन के आधार पर शिक्षा की पुनर्संरचना की आवश्यकता को रेखांकित किया गया है, इस अध्ययन में इसके स्वरूप को भी स्पष्ट करने का प्रयास है। यह अध्ययन प्रस्तुत शोध से भिन्न है क्योंकि प्रस्तुत शोध में मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्व की शिक्षा वस्तु का शिक्षकों के व्यक्तित्व एवं जीवनशैली पर प्रभाव के संदर्भ में है।
- **चावड़ा हिना (2017) "मध्यस्थ दर्शन–सहअस्तित्ववाद आधारित मूल्य शिक्षा संबंधी पाठ्यक्रमों का अंतर्वस्तु विश्लेषण एवं प्रभाव का अध्ययन"** इस शोध प्रबंध में मध्यस्थ दर्शन–सहअस्तित्ववाद आधारित मूल्य शिक्षा पाठ्यक्रमों की विषय–वस्तु का अंतर्वस्तु विश्लेषण किया है, इस विषय–वस्तु को इस अध्ययन में एस.सी.ई.आर.टी., रायपुर, छत्तीसगढ़ मापनी का प्रयोग करके इन पाठ्यक्रमों की प्रभावशीलता का भी अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में अंतर्वस्तु विश्लेषण विधि से पाठ्यक्रमों की अंतर्वस्तु की पहचान एवं उसकी प्रभावशीलता का अध्ययन किया गया है। सर्वेक्षण विधि से इन पाठ्यक्रमों की प्रभावशीलता का भी आँकलन मापनियों से किया गया है, लेकिन इस अध्ययन में व्यक्तित्व एवं जीवन शैली के प्रभावों का अध्ययन नहीं किया गया है। अतः यह प्रस्तुत शोध से भिन्न हैं।
- **बघेल राधेश्याम (2016)** ने मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद आधारित मूल्य–शिक्षा पर अध्ययन किया, जिसके शोध–पत्र का शीर्षक है– चेतना विकास मूल्य–शिक्षा प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास एवं शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन। इसमें शोधकर्ता ने पाया कि

चेतना विकास मूल्य–शिक्षा का प्रशिक्षित एवं अनुभवी शिक्षकों पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। यहां शोधकर्ता ने मूल्य शिक्षा के प्रभावों का अध्ययन किया है। शोधकर्ता ने मध्यस्थ दर्शन आधारित मूल्य–शिक्षा को शिक्षा–व्यवस्था में शामिल करने का सुझाव एवं शिक्षा के मानवीयकरण की आवश्यकता पर जोर दिया है। इसके साथ ही शिक्षक–शिक्षा में चेतना विकास आधारित मूल्य–शिक्षा को अनिवार्य पाठ्यक्रमों के रूप में शामिल करने का सुझाव दिया गया है। यह अध्ययन प्रस्तुत शोध से भिन्न है। प्रस्तुत शोध मूल रूप से मध्यस्थ दर्शन–सहअस्तित्ववाद की विषयवस्तु का प्रशिक्षण लेने वाले शिक्षकों के व्यक्तित्व और जीवनशैली पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन है।

- **बघेल राधेश्याम (2015) "चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रशिक्षण एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास शिक्षक प्रभाविता का अध्ययन"** इस शोध प्रबंध में मध्यस्थ दर्शन–सहअस्तित्ववाद आधारित चेतना मूल्य शिक्षा प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास और शैक्षिक वातावरण निर्माण को सर्वेक्षण विधि से अध्ययन किया गया है। जिसमें आत्मविश्वास को मापनी और शैक्षिक वातावरण निर्माण का अध्ययन मापनी से किया गया है। जिसमें यह निष्कर्ष निकाला है कि प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा शिविर का शैक्षिक वातावरण निर्माण में सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, शैक्षिक अभिरूचियों पर धनात्मक प्रभाव पडता है, प्रशिक्षित शिक्षकों पर छात्रों के साथ सार्थक अंतर्संबंध बनता है और छात्रों के सम्मुख स्वयं के अभिव्यक्त होने पर विश्वास बनता है वे कक्षा में रूचिकर एवं प्रभावी अध्ययन कराते हैं शिक्षकों के विचार–व्यवहार पर भी सार्थक अंतर होता है। इस अध्ययन में मध्यस्थ दर्शन–सहअस्तित्ववाद के दीर्घ प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों के व्यक्तित्व एवं जीवनशैली को अध्ययन नहीं किया गया है। अतः यह प्रस्तुत शोध से भिन्न अध्ययन है।
- **सिसोदिया मनीष (2014)** ने किशोरावस्था में मूल्यों के विकास में अभिभावक, शिक्षक एवं सिनेमा की भूमिका' पर अध्ययन किया है। उन्होंने पाया कि बच्चों में सामाजिक चेतना अभिभावक से प्राप्त की जा सकती है। अभिभावक द्वारा ही किशोरों को सामाजिक नैतिक मूल्यों का ज्ञान होता है। परस्पर विश्वास से मूल्यों में वृद्धि अभिभावकों द्वारा ही की जाती है। मूल्यों के निर्माण में शिक्षक की भूमिका अधिक है। शिक्षक द्वारा दिए गए ज्ञान को छात्र अधिक महत्व देते हैं। शिक्षक ही किशोर शिष्यों के जीवन में ईमानदारी, सदाचार, चरित्र–निर्माण तथा कर्तव्यनिष्ठा का बीजारोपण करते हैं। मूल्यों के विकास में सिनेमा एवं टेलिविजन की भूमिका यह है कि इनसे मनोरंजन के साथ–साथ व्यावसायिक जानकारियां भी प्राप्त होती हैं। मनोरंजन के साथ–साथ मानसिक प्रशिक्षण देना ही समाज–सुधार का प्रमुख साधन है। इसके साथ ही राष्ट्रीय एकता में नैतिक मूल्यों आदि गुणों का समावेश भी इसमें दिया जाना चाहिए। वर्तमान में यह किशोरों के चरित्र–पतन का कारण बन रहा है, जिस कारण मूल्यों का ह्मस होता है और इसी कारण किशोर दिशा–भ्रमित हो रहे हैं।यह अध्ययन प्रस्तुत शोध से भिन्न है। प्रस्तुत शोध मूल्य रूप से

मध्यस्थ दर्शन–सहअस्तित्ववाद की विषयवस्तु का प्रशिक्षण लेने वाले शिक्षकों के व्यक्तित्व और जीवनशैली पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन है।

- **बघेल आर.एस. (2014)** ने अपने लघु शोध में शिक्षकों एव ंबी.एड. छात्रों पर चेतना विकास मूल्य–शिक्षा के प्रभाव का समीक्षात्मक अध्ययन किया। चेतना विकास मूल्य–शिक्षा से प्रशिक्षित शिक्षकों एवं छात्राध्यापकों का दृष्टिकोण जानने के लिए यह लघु शोध किया। आगे यहां पर शोधकर्ता की यह उत्सुकता है कि मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद आधारित शिक्षा के स्वरूप में शिक्षकों का स्वरूप क्या होगा, यह जानने की जिज्ञासा बनी है। आपने अध्ययन से पाया कि मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद आधारित मूल्य–शिक्षा में शिक्षक–शिक्षा में मूल्य–शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम एवं विषय–वस्तु उपलब्ध है। यह अध्ययन प्रस्तुत शोध से भिन्न है। प्रस्तुत शोध मुख्य रूप से मध्यस्थ दर्शन–सहअस्तित्ववाद की विषयवस्तु का प्रशिक्षण लेने वाले शिक्षकों के व्यक्तित्व और जीवनशैली पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन है।
- **खान एवं चावड़ा (2014)** ने 'चेतना विकास मूल्य–शिक्षा के प्रकाश में 21वीं सदी में शिक्षकीय शिक्षा के विकल्प का अध्ययन किया है। वर्तमान शिक्षा के परिणामों की समीक्षा करते हुए शोधकर्ता ने पाया कि शिक्षा में मानवीय मूल्यों को लाने की आवश्यकता है। मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद आधारित चेतना विकास मूल्य–शिक्षा को शिक्षकीय शिक्षा के पाठ्यक्रमों में शामिल करने का विकल्प प्रस्तुत किया गया। अध्ययन से पाया गया कि विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालय तक चेतना विकास मूल्य–शिक्षा की विषय–वस्तु को शिक्षा में शामिल करन की आवश्यकता है।यह अध्ययन प्रस्तुत शोध से भिन्न है। प्रस्तुत शोध मूल्य रूप से मध्यस्थ दर्शन–सहअस्तित्ववाद की विषयवस्तु का प्रशिक्षण लेने वाले शिक्षकों के व्यक्तित्व और जीवनशैली पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन है।
- **पासवान (2013)** ने 'उच्च शिक्षा संस्थानों में मूल्य आधारित शिक्षा' की आवश्यकता का अध्ययन किया। उन्होंने कहा कि बच्चों में पाए जा रहे अनैतिक कार्य–व्यवहार के कारण उच्च शिक्षा संस्थानों में मूल्य–शिक्षा की आवश्यकता दिखाई दे रही है। यह अध्ययन प्रस्तुत शोध से भिन्न है। प्रस्तुत शोध मूल रूप से मध्यस्थ दर्शन–सहअस्तित्ववाद की विषयवस्तु का प्रशिक्षण लेने वाले शिक्षकों के व्यक्तित्व और जीवनशैली पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन है।
- **खान ए. (2013)** ने चेतना विकास मूल्य–शिक्षा प्रकाश में सार्वभौम व्यवस्था हेतु शिक्षकीय शिक्षा के विकल्प का अध्ययन किया। उन्होंने शिक्षकीय शिक्षा के पाठ्यक्रमों में चेतना विकास मूल्य–शिक्षा को शामिल करने का विचार व्यक्त किया। यह अध्ययन प्रस्तुत शोध से भिन्न है। प्रस्तुत शोध मूल रूप से मध्यस्थ दर्शन–सहअस्तित्ववाद की विषयवस्तु का प्रशिक्षण लेने वाले शिक्षकों के व्यक्तित्व और जीवनशैली पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन है।
- **खरे जे. (2013)** ने 'मूल्यपरक शिक्षा एक अध्ययन' विषय पर अध्ययन किया। मूल्यपरक शिक्षा वह है, जो बच्चों के व्यक्तित्व के तीनों पक्षों– सीखने, अनुभव एवं व्यवहार में लाने का विकास करती है। उन्होंने कहा कि छात्रों व शिक्षकों में मूल्यों का विकास करके शिक्षा की नींव को

मजबूत बनाया जा सकता है, क्योंकि यही लोग देश का भविष्य तैयार करते हैं। अध्ययनकर्ता ने पाया कि मूल्यों को केवल मूल्यपरक शिक्षा द्वारा ही विकसित किया जा सकता है, वरन मूल्यों को विकसित करने के लिए यह भी आवश्यक है कि व्यक्ति मूल्यमय वातावरण में भी रहे। शोधकर्ता ने पाया कि चेतना को विकसित करना मूल्यों के विकास की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। उपरोक्त अध्ययन में मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद आधारित मूल्य–शिक्षा संबंधी पाठ्यक्रमों का अंतर्वस्तु विश्लेषण नहीं किया गया है, न ही इनके अध्ययन में प्रभाव का अध्ययन किया गया है, जो कि प्रस्तुत शोधकार्य से भिन्न है। यह अध्ययन प्रस्तुत शोध से भिन्न है। प्रस्तुत शोध मूल रूप से मध्यस्थ दर्शन–सहअस्तित्ववाद की विषयवस्तु का प्रशिक्षण लेने वाले शिक्षकों के व्यक्तित्व और जीवनशैली पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन है।

- **कश्यप पामेश्वरी (2013)** ने लघु शोध किया जिसका विषय था मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद आधारित ''चेतना विकास मूल्य शिक्षा के अध्ययन द्वारा शिक्षकों के व्यवहार का अध्ययन उनके कार्यानुभव एवं लिंग के आधार पर''प्रस्तुत लघु शोध में चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्राप्त प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के मध्य तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। जिसके परिणाम एवं व्याख्या उपरांत यह स्पष्ट होता है कि चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्राप्त शिक्षकों का व्यवहार अप्रशिक्षित शिक्षकों की तुलना में अधिक अच्छा होता है तथा चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्राप्त शिक्षकों के व्यवहार पर उनके कार्यानुभव एवं लिंग का कोई प्रभाव नहीं पडता है। अतः इससे स्पष्ट होता है कि मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद आधारित चेतना विकास मूल्य शिक्षा का सकारात्मक प्रभाव स्त्री एवं पुरूष सभी पर एक समान पडता है। चाहे वह अधिक कार्यानुभव वाले हो या कम। सभी के ऊपर इसका प्रभाव समान रहता है।
- **पटेल स्वाति (2013)** ने लघु शोध किया जिसका विषय था मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद आधारित '' बी.एड. प्रशिक्षार्थियों पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा द्वारा पारिवारिक वातावरण पर पड़ने वाले प्रभाव अध्ययन'' में यह बताया गया है कि प्रशिक्षित प्रशिक्षार्थी का पारिवारिक वातावरण अच्छा रहता है। वे परिवार में ठीक से निर्वाह कर पाते है तथा संबंधों को ठीक से समझ पाते है, अप्रशिक्षित की अपेक्षा।
- **वर्मा नंदिनी (2013)** ने लघु शोध किया जिसका विषय था स्नातक छात्रों पर मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद आधारित ''चेतना विकास मूल्य शिक्षा द्वारा समायोजन के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन''। प्रस्तुत लघु शोध में स्नातक छात्रों पर परिणाम तथा व्याख्या के उपरांत यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद आधारित चेतना विकास मूल्य शिक्षा द्वारा प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित छात्रों के समायोजन में सार्थक अंतर पाया जाता है तथा चेतना विकास मूल्य शिक्षा अध्ययन पर लिंग तथा डिग्री कोर्स का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
- **राजपूत उमेश (2013)** ने लघु शोध किया जिसका विषय था मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद आधारित ''चेतना विकास मूल्य प्रशिक्षण द्वारा बालकों के सामाजिक मूल्य का अध्ययन उनके आयु व लिंग के आधार पर किया गया है।'' प्रस्तुत शोध में जिसके परिणाम एवं व्याख्या के

उपरांत यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि चेतना विकास मूल्य प्रशिक्षित छात्र तथा अप्रशिक्षित छात्रों के सामाजिक मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया जाता है। मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद आधारित चेतना विकास मूल्य शिक्षा अध्ययन पर उनके आयु एवं लिंग का कोई प्रभाव नहीं पडता है। इससे स्पष्ट होता है कि चेतना विकास मूल्य शिक्षा का अध्ययन किसी भी उम्र तथा लिंग के लोगों को दिया जा सकता है।

- **मोदी एवं मोदी (2012)** ने 'मूल्य और शिक्षक–शिक्षा' पर आपने अध्ययन किया है। विद्या वह है, जो विनम्र बनाए। उन्होंने कहा कि विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों के विकास करने से पहले हमें हमारी शिक्षक–शिक्षा व्यवस्था में इस प्रकार के मूल्यों को स्थापित करना होगा, जिससे भावी शिक्षकों में इन मूल्यों की स्थापना की जा सके। जब शिक्षक मूल्यवान होंगे, तभी देश के भावी छात्र–छात्राओं में अधिक–से–अधिक नैतिक मूल्यों का विकास हो सकेगा। यह अध्ययन प्रस्तुत शोध से भिन्न है। प्रस्तुत शोध मूल्य रूप से मध्यस्थ दर्शन–सहअस्तित्ववाद की विषयवस्तु का प्रशिक्षण लेने वाले शिक्षकों के व्यक्तित्व और जीवनशैली पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन है।
- **नौटियाल आर. सी. (2012)** ने मानवीय मूल्य और वैश्विक शांति के परिप्रेक्ष्य में अध्यापक शिक्षा का अध्ययन किया। इस शोध में शोधार्थी द्वारा अध्यापक–शिक्षा में एवं शिक्षा में वैश्विक शांति के लिए मानवीय मूल्य–आधारित शिक्षा के समावेश की बात कही है। यह अध्ययन प्रस्तुत शोध से भिन्न है। प्रस्तुत शोध मूल्य रूप से मध्यस्थ दर्शन–सहअस्तित्ववाद की विषयवस्तु का प्रशिक्षण लेने वाले शिक्षकों के व्यक्तित्व और जीवनशैली पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन है।
- **बघेल एवं साहू (2012)** ने शिक्षकों एवं डी.एड. छात्राध्यापकों पर चेतना विकास मूल्य–शिक्षा के प्रभाव का समीक्षात्मक अध्ययन किया है एवं अपने अध्ययन में शिक्षकों एवं डी.एड. छात्राध्यापकों पर चेतना विकास मूल्य–शिक्षा शिविर के प्रभाव का समीक्षात्मक अध्ययन किया। शोध के निष्कर्ष में चेतना विकास मूल्य–शिक्षा का डी.एड. की छात्राध्यापकों पर सार्थकता की उपकल्पना को रेखांकित किया है। उन्होंने शोध–अध्ययन में शिक्षकों एवं छात्राध्यापकों में चेतना विकास मूल्य–शिक्षा की प्रभाविता को जानने हेतु आठ आयामों शैक्षिक वातावरण, शैक्षिक अभिरुचि, सार्थक अंतर्संबंध, स्वयं में विश्वास, रुचिकर एवं प्रभावी अध्ययन, विचार, व्यवहार एवं अनुभव का स्वनिर्मित प्रश्नावली के माध्यम से अध्ययन किया एवं शिक्षकों में स्वयं में विश्वास एवं छात्राध्यापकों में व्यवहार–पक्ष को छोड़कर प्रत्येक के सात आयामों में सकारात्मकता पाई गई। यह अध्ययन प्रस्तुत शोध से भिन्न है। प्रस्तुत शोध मूल रूप से मध्यस्थ दर्शन–सहअस्तित्ववाद की विषयवस्तु का प्रशिक्षण लेने वाले शिक्षकों के व्यक्तित्व और जीवनशैली पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन है।
- **चेतना विकास मूल्य शिक्षा (कक्षा 1 से 5) प्रकाशित राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं शैक्षिक परिषद, रायपुर, छत्तीसगढ़ (2011–2012)** –इस अध्ययन में पहली बार मध्यस्थ दर्शन के आधार पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों को कक्षा एक से आठ तक विकसित

एवं प्रकाशित किया गया। जिसमें मध्यस्थदर्शन सहअस्तित्ववाद के मूल तत्व एवं विषय–वस्तु को विद्यालयीन पाठ्यपुस्तक में वर्गीकृत किया गया है। जिसमें कक्षा एक से आठ तक इसमें विषय–वस्तु के अंतर्संबंध, अनुक्रम, सम्प्रेषणीयता एवं भाषा को सरलीकरण किया गया है। इन पुस्तकों की मूल विषय–वस्तु मूल्य, चरित्र, नैतिकता, व्यवस्था, मानव संबंध, सह अस्तित्व, चार अवस्थाओं के संबंध, विकास क्रम–विकास, जागृति क्रम आदि को शामिल किया गया है यह अध्ययन प्रस्तुत शोध से भिन्न है। प्रस्तुत शोध मुख्य रूप से मध्यस्थ दर्शन–सहअस्तित्ववाद की विषयवस्तु का प्रशिक्षण लेने वाले शिक्षकों के ऊपर पड़ने वाले प्रभाव पर है।

- **पाठक सुनीता (2006–2007) लघु शोध प्रबंध "स्त्री एक मानव"** – इस शोध प्रबंध में मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद के आधार पर स्त्री–पुरूष समानता के आधार बिंदु को सर्वमानव में वैचारिक क्षमता की समानता के आधार पर पहचाना गया। जिसमें मानव सहज जाति एक, सर्वमानव में मानवत्व समान, सर्वमानव मे शुभाकांक्षा समान, सर्वमानव में मानव धर्म समान, सर्वमानव नित्य समाधान का ही प्यासा है, सर्वमानव में लक्ष्य समान है आदि के आधार पर स्त्री–पुरूष में समानता के बिंदुओं का अध्ययन किया गया है।

मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद से संबंधित अन्य शोध अध्ययन :–

- 2016 में पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय में शिक्षा संकाय के अन्तर्गत मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद आधारित चेतना विकास मूल्य शिक्षा पर पी.एच.डी./शोध कार्य आर. एस. बघेल जी एन.सी.ई.आर.टी., रायपुर द्वारा विषय – चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के "आत्मविश्वास" एवं "शिक्षण प्रभावशीलता" का अध्ययन विषय पर सम्पन्न किया गया। इसमें इन दोनों चरों के आधार पर प्रमाण विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।
- आई.ए.एस.ई. विश्वविद्यालय, गांधी विद्या मंदिर, सरदार शहर, राजस्थान के तत्वाधान में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन "Teacher Education for Peace and harmony" नई दिल्ली 11 से 13 फरवरी 2012 में सहअस्तित्ववादी शिक्षा से प्रेरित 30 से अधिक शोध पत्र पढ़े गये । जिनका प्रकाशन शोध पत्रों की संक्षेपिका और अंतर्राष्ट्रीय सेमीनार की रिर्पोट में प्रमुख आलेखों में मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्व आधारित सिद्धांतों एवं विषयवस्तु के आधार पर शिक्षक शिक्षा (Teacher Education) की विषयवस्तु में होने वाले गुणात्मक परिवर्तन की संभावनाओं को प्रस्तुत किया गया है।
- 28 जनवरी 2011 को IIIT Hyderabad का शोधपत्र "**एन एक्सपेरिमेंट इन इनट्रोडक्शन ह्युमेन वैल्युस कोर्स इन अंडर ग्रेजुएशन कैरिकुलम ऑफ इंजीनियरिंग एजुकेशन**" के द्वारा प्रो. प्रदीप रामाचर्ला, प्रो. राजीव सांगल, प्रो. अभिजीत मित्र, डॉ. नवज्योति सिंह एण्ड कार्लपेलम प्रकाशित किया गया। (An experiment in introduction Human Values Course in undergraduate curriculum of engineering education By Rama Charla, Pardeep Kumar, Pr. Rajeev Sangal, Pr. Abhijit Mitra, Dr. Navjyoti Singh and karlapalem).

आई.आई.टी, हैदराबाद के इस शोध पत्र में इंजीनियरिंग के छात्रों पर यूनीवर्सल ह्युमेन वेल्यू के कोर्स की आवश्यकता, इसका छात्रों और संस्थान पर पड़ने वाले प्रभाव आदि को प्रस्तुत किया।

- 07 जनवरी 2012 को प्रो. राजीव सांगल, निर्देशक, अन्तर्राष्ट्रीय संस्थान सूचना प्रौद्योगिकी, हैदराबाद द्वारा अकादमिक संस्थानों में मध्यस्थदर्शन सहअस्तित्ववाद आधारित मानवीय मूल्य विषय पर केश स्टडी रिपोर्ट तैयार की और प्रस्तुत की गई । इसमें भी उपरोक्त शोधपत्रों के समान ही विषयवस्तु को प्रस्तुत किया।
- वर्ष 2009–10 में पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़ के तहत् मास्टर ऑफ एजुकेशन (एम.एड.) उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु शोधार्थी डॉ. श्रीमती सीमा श्रीवास्तव द्वारा श्रीमती वंदना अग्रवाल व्याख्याता के मार्गदर्शन में शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, शंकर नगर, रायपुर केन्द्र में लघुशोध प्रबंध प्रस्तुत किया गया है। उल्लेखनीय है कि इस शोध का शीर्षक ''शिक्षा के एकांगी स्वरूप के संवाहक छात्राध्यापकों एवं शिक्षक–प्रशिक्षकों पर मानवीय मूल्यों की शिक्षा ''मध्यस्थ दर्शन'' के प्रभाव का अध्ययन'' है। डॉ. श्रीमती सीमा श्रीवास्तव के उक्त लघुशोध से छत्तीसगढ़ के शिक्षकों छात्रों पर सहअस्तित्ववादी साहित्य के गुणात्मक प्रभावों की शोधपरक प्रस्तुति की गई है।
- 2009 में डॉ आर. आर. गौड़, प्रो. गणेश बागड़िया और प्रो. राजीव सांगल द्वारा मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद पर आधारित पुस्तक ''ह्युमन वैल्युस एंड प्रोफेशनल इथिक्स'' का एक्सेल पब्लिकेशन, दिल्ली द्वारा प्रकाशन किया गया। इस पुस्तक में मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद के आधार पर सार्वभौमिक मानव मूल्य (Universal Human Values) के विषयवस्तु को प्रस्तुत किया गया। जिसमें मूल रूप से स्वयं में शरीर साथ, परिवार में, समाज में, प्रकृति में और अस्तित्व में व्यवस्था और इसमें अंतर्निहित मूल्यों की व्याख्या प्रस्तुत की गई है।
- सहअस्तित्ववाद के विचार के आधार पर एक शोध कार्य इंजीनियरिंग छात्र श्री देवांश मित्तल द्वारा सूचना प्रौद्योगिकी अंतर्राष्ट्रीय संस्थान IIIT हैदराबाद में किया जा रहा है । वर्ष 2009 में उक्त संस्थान द्वारा शोध ग्रंथ का शीर्षक "Analysis of belief structure" शीर्षक पंजीकृत कर लिया गया है । इस शोध में शोध छात्र द्वारा संस्थान में नियमित शैक्षणिक सत्रों में मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद आधारित चेतना विकास मूल्य शिक्षा की कक्षाओं में साक्षात्कार विधि से छात्रों की मान्यताओं और आचरण में परिवर्तन का अध्ययन को प्रस्तुत किया गया।
- वर्ष 2007 में दिल्ली आई.आई.टी में सहअस्तित्ववाद पर केन्द्रित राष्ट्रीय सेमीनार (Existence is Coexistence) की रिर्पोट प्रकाशित हुई है जिसमे जीवन विद्या के प्रकाश में मूल्यशिक्षा पर सामग्री तथा तत्कालीन राष्ट्रपति महामहिम ए.पी.जे.अब्दूल कलाम के सहअस्तित्ववाद मूलक विचार प्रकाशित है। इस रिर्पोट में विभिन्न विद्वानों के सह–अस्तित्ववाद संबंधी शोध एवं अध्ययन पर आधारित अध्ययन संक्षेपिकाएं है।
- वर्ष 2006 में श्रीमती सुनीता पाठक के समन्वयन में, मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्वाद के विशेष संदर्भ में 'स्त्री एक मानव अवधारणात्मक अध्ययन' विषय पर महिला अध्ययन केन्द्र बरकतुल्ला

विश्वविद्यालय भोपाल की फैलोशिप पर शोध परियोजना के अन्तर्गत शोध हुआ। इस परियोजना की निर्देशक प्रो. आशा शुक्ला तथा परियोजना सहायक निशांत कोचे थे। इसी प्रकार शोध आलेख ''स्त्री सशक्तिकरण और परिवार तथा मीडिया में स्त्री'' विमर्श विषय पर, बरकतुल्ला विश्वविद्यालय के शोध पत्रिका में वर्ष 2006 में प्रकाशित हुआ। उक्त आलेखों की पृष्ठभूमि में सहअस्तित्ववाद है। जिसमें श्रीमती पाठक ने आज की अधूरी तथा दिशाहीन स्त्री विमर्श के बीच स्त्री को एक मानव के रूप में पहचानने पर जोर दिया। सहअस्तित्ववाद में ही स्त्री को संबंधों के आधार, पर मानव रूप में एक इकाई के रूप में पहचाना गया है ना कि लैंगिक भिन्नता या शरीरों के आधार पर। इस शोध में स्त्री विमर्श के अर्थ में मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद के महत्व को रेखांकित किया गया है।

- 7 नवम्बर 2006 को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान N.I.T. रायपुर छत्तीसगढ़ तथा अभ्युदय संस्थान (मानवीय शिक्षा शोध केन्द्र) तथा सहअस्तित्ववाद अध्ययन केन्द्र अछोटी, दुर्ग का छत्तीसगढ़ के द्वारा भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुलकलाम के रायपुर प्रवास पर ''समाधान'' नामक पत्रिका प्रकाशित की गई। यह पत्रिका छत्तीसगढ़ के इंजीनियरिग कालेजों में मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद से निःसृत चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रयोगों की सफलता तथा छात्रों शिक्षकों के अनुभवों की संदर्भ पुस्तिका है। इसमें चेतना विकास मूल्य शिक्षा के पाठ्यक्रमों की विषयवस्तु और विद्यार्थियों पर इसके प्रभाव को प्रकाशित किया गया।
- 14 अगस्त 2006 को स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर भारत गणराज्य के तत्कालीन राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा अपने राष्ट्र के नाम संबोधन में आधिकारिक रूप से मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद पर आधारित "जीवन विद्या" प्रयोग को भारत के शैक्षणिक परिदृश्य में, काफी उपयोगी और प्रासंगिक बताया गया । जिसमें प्रेरित होकर देश में अन्य शैक्षिक संस्थाओं से वैश्विक मानव मूल्य (Universal Human Values) का शिक्षण प्रारंभ हुआ।
- वर्ष 2005 में, ''हिन्दी पत्रकारिता भाषा की अर्थ संप्रेषण क्षमता'' विषय पर मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद के विशेष संदर्भ में शोध डॉ. सुरेन्द्र पाठक द्वारा किया गया। हिन्दी भाषा और साहित्य के लिए यह शोध विशेष उल्लेखनीय है क्योंकि इसमें प्रथमतः साहित्य, भाषा, शब्दों की अर्थवहन क्षमता तथा सहअस्तित्ववाद में प्रयुक्त शब्दों और उनके अर्थो का तुलनात्मक अध्ययन मिलता है। यह शोध मूल रूप से पत्रकारिता में प्रयुक्त शब्दों की अर्थ सम्प्रेषण क्षमता का अध्ययन है।
- वर्ष 2000 में समग्र स्वास्थ्य के क्षेत्र में 'इस्टवेस्ट युनिवर्सिटी ऑफ होलिस्टिक हेल्थ साईंस, मिसोरी, संयुक्त राज्य अमेरिका' से डॉ. पूर्णिमा बाजपेयी को 'हेल्थीहयुमन बीइंग द व्यू ऑफ अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन बाई ए.नागराज शर्मा (Healthy Human being the view of Astitva Moolak Manav Kendrit Chintan by A. Nagraj sharma) विषय पर शोध किया। उक्त शोध चिकित्सक डॉ. ओ.पी. तिवारी के निर्देशन में पूरा किया। उक्त शोध में डॉ. बाजपेयी ने एक स्वस्थ मनुष्य को ए. नागराज शर्मा (प्रणेता – मध्यस्थ दर्शन

सहअस्तित्ववाद) के विचारों द्वारा परिभाषित किया। इस शोध में चिकित्सा शास्त्र में मनुष्य में निहित चैतन्यपक्ष, को जिसे सहअस्तित्ववाद में गठनपूर्ण परमाणु (जीवन) कहा गया है तथा परम्परा में जिसे आत्मा की संज्ञा देकर संकेत करने का प्रयास किया गया है। जीवन की स्वस्थता को ही मनः स्वस्थता के रूप में व्याख्यायित किया गया है। संपूर्ण सह अस्तित्व के साथ मानव के संबंधों की पड़ताल एवं विश्लेषण स्वस्थ रहने के लिए, इस शोध में की गई है।

- वर्ष 1995 में मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद पर केन्द्रित 'परिवार मानव' नामक द्विमासिक पत्रिका का प्रकाशन हिन्दी और अंग्रेजी में वर्ष 2009 तक लगातार प्रकाशित हुए। इसके संपादक आई. आई.टी दिल्ली से डॉक्टरेट प्राप्त डॉ. रणसिंह आर्य थे। इसका प्रकाशन संस्थान जीवन विद्या प्रतिष्ठान गोविंदपुर–खारी, बिजनौर, उ.प्र. हुआ था। इसके 70 से अधिक अंक उपलब्ध हैं। जिसमें मध्यस्थ दर्शन के प्रमुख सिद्धांत पर आलेख प्रकाशित हैं।
- मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद पर निम्नांकित अध्ययन एवं शोध देखने को मिलते है। इस सभी का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि इसमें मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद के विभिन्न पक्षों को लेकर अध्ययन शोध एवं प्रकाशन के कार्य हुए। प्रस्तुत शोध के संदर्भ में इन अध्ययनों को देखने से यह स्पष्ट होता है कि पूर्व में प्रस्तुत शोध जैसा कोई भी अध्ययन नहीं है। इनमें किसी भी प्रकार का दुहराव नहीं है अतः प्रस्तुत शोध नये चरों एवं नई दृष्टि से किये गए हैं। वर्ष 1994 में सहअस्तित्ववाद से प्रभावित होकर आई.आई.टी दिल्ली के आर.डी.ए.टी. सेन्टर से डॉ. रणसिंह आर्य ने डॉ. संतोष सत्या और पद्मा वासुदेवन के निर्देशन में सिनर्जेटिक एग्रीकल्चर सिस्टम एंड डेवलपमेंट पर शोधकार्य किया जिसमें उन्होंने विकास को परिभाषित किया। आर्गेनिक एग्रीकल्चर को व्याख्यायित किया। उक्त शोध ग्रंथ में (SAP) सेप को प्रथमतः प्रस्तुत किया। यह सेप (SAP) मूलतः सहअस्तित्ववादी सिद्धांत का शाब्दिक संकेत था। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि उक्त शोध में भी सहअस्तित्ववादी विचारों के महत्व को स्वीकारा गया।

शोधकर्ता
अवधेश पटेल
संचालक एवं सहा. प्राध्यापक
समाधान महाविद्यालय, बेमेतरा (छ.ग.)